



शिक्षा के क्षेत्र में ए. आई. की चुनौतियां: एक समाजशास्त्रीय विमर्श

नेहा शर्मा, शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा राज. nehank3103@gmail.com

सार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाते हुए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को नया आयाम दिया है। आधुनिक तकनीक के इस युग में AI के प्रयोग ने न केवल शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद को सरल और प्रभावी बनाया है, बल्कि इसे अधिक व्यक्तिगत और सटीक भी बना दिया है। हालांकि, इन तकनीकी प्रगतियों के साथ कई सामाजिक, नैतिक और व्यावहारिक चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। AI के व्यापक उपयोग से जहां एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में नये अवसर पैदा हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर समाज में वर्गभेद, डिजिटल असमानता और नैतिक दुविधाएं बढ़ने का खतरा भी सामने आ रहा है। यह विमर्श शिक्षा में AI के प्रभावों को केवल तकनीकी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में भी समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि कैसे AI शिक्षा में समानता, समावेशिता और सामुदायिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह भी जरूरी है कि हम शिक्षा में AI के उपयोग के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर विचार करें। इसका उद्देश्य केवल चुनौतियों की पहचान करना ही नहीं, बल्कि इन चुनौतियों से निपटने के उपायों और शिक्षा में AI के संतुलित और नैतिक उपयोग की दिशा में ठोस कदम उठाना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक तकनीक है जिसके ज़रिए मशीनों को मानव जैसे सोचने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। यह कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो मशीनों को मानव बुद्धि की प्रक्रियाओं का अनुकरण करने में सक्षम बनाती है। 1955 में जॉन मैकार्थी ने इसको कृत्रिम बुद्धि का नाम दिया और इसे "विज्ञान और इंजीनियरिंग के द्वारा बुद्धिमान मशीनों को बनाने" के रूप परिभाषित किया। कृत्रिम बुद्धि अनुसंधान के लक्ष्यों में तर्क, ज्ञान की योजना बनाना, सीखना, धारण करना और वस्तुओं में हेरफेर करने की क्षमता, आदि शामिल हैं। कृत्रिम बुद्धि को लेकर दावा किया जाता है कि यह मानव की बुद्धि का एक केंद्रीय संपत्ति के रूप में मशीन द्वारा अनुकरण कर सकता है। आधुनिक युग में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। तकनीकी प्रगति ने न केवल शिक्षण और सीखने के तरीकों को बदल दिया है, बल्कि शिक्षकों, छात्रों और समाज के बीच की पारस्परिकता को भी प्रभावित किया है। हालांकि, एआई के साथ कई संभावनाएं हैं, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। इस लेख में, शिक्षा के क्षेत्र में एआई की चुनौतियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है।